परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : +91 8434170118

तक्ष शिला

अंक – पंद्रह, अप्रैल 2019 – जुलाई 2019

कविता

हाथी जब गाँव मे आया
सब बच्चों ने शोर मचाया
बच्चे फिर डर गये
अपने घर मे भाग गये
हाथी गाछ के पत्ते खाया
फिर जोर से आवाज लगाया
हाथी गाँव से बाहर आया
और सुड़ हिलाकर डराया
शाम हो गया, हाथी अपने
घर आ गया।

अनिश कुमार राम, कक्षा-6, घर - बंगरा उज्जैन

खुले से प्रश्न

वह क्या है जो आधे सेब
जैसा दिखाई देता है?

(बालपथिक)
नाम जया कुमारी
घर - बंगरा उज्जैन
कक्षा - 7

कविता

गाँव में हाथी

गाँव में हाथी
हाथी आया गाँव में।
बच्चे हो जाते हैं खामोश।
सुड हिलाता हाथी चलता।
दाँत है उसका लम्बा-लम्बा।
रंग है उसका काला-काला।
हाथी बहुत बड़ा जानवर है।
हाथी जब रास्ते पर चलता है।
सब लोग डर जाते है।
हाथी का बच्चा-गोल मटोल।
खुब मचाये जंगल मे शोर।

नाम - प्रीति कुमारी
कक्षा - 8, ग्राम-बंथू सलोना

बाल संवाद

प्यारे दोस्तों,
मैं हुँ चहकने की ललक। इस बार अंक - 15 मे मेरे बाल लेखको ने, मेरे लिए मेरे बाल लेखको ने, बहुत अच्छा लिखा है, इससे पता चलता है, कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखको मे काफी कुछ बदलाव हुआ है। इस बार तो मेरे प्यारे लेखको ने मुझे खुद से तैयार किये है, सर्व प्रथम 2014 मे मुझे प्रकाशित किया गया, जिसमे मेरे बाल लेखको ने अपनी रचना को प्रदर्शित किया। उस दरमियान उन्ह बेहद खुशी हुई और लगातार मेरे लिए अपनी रचना लिखते रहे। आशा करता हूँ कि आगे भी ऐसे ही अच्छा लिखेगे। यह परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमे बच्चे अपनी-अपनी कला को दिखाने की कोशिश करतें हैं।

आपका साथी मैं
चहकने की ललक

कहानी

एक सुनसान बगीचा था वह बहुत अंधेरा था। वहाँ एक बार मैं घुमने के लिए गयी, वहाँ जाने के बाद मे आम खाना चाहती थी, लेकिन जैसी ही मैं वहा आम के पेड़ के नीचे पहुची वहा अजीब सी आवाज आने लगी। ऐसा लग रहा था कि कोई जंगली जानवर वहाँ आ गया है। मैं डर के मारे पेड़ पर चढ़ गई नीचे देखी, तो एक शेर खड़ा था। मैं काफी डर गयी। मैं शेर के जाने का इंतजार करने लगी पर वह वहाँ से जा ही नही रहा था। शाम होने वाली थी, अब शेर भी वहा से चला गया था मैं पेड़ से नीचे उतरी बगीचे मे अंधेरा हो चुका था और अजीब-अजीब सी आवाजे आने लगी मैं बहुत डर गई थी। किसी तरह से बगीचे से बाहर आयी। मुझे आज तक उस सुनसान बगीचे की यादे ताजा है।

नाम खुशी कुमारी, कक्षा-7, घर-बंथू श्रीराम

आपबीती

सुनसान बगीचे

हम अपने दोस्तो के साथ कही जा रहे थे। तभी हम और हमारी दोस्त खुशी ने आम और ईमली का पेड़ देखा तो मेरी दोस्त बोली, चलो आम खाने चलते है। तभी मैंने कहा ईमली नही खाअगी तो खुशी बोली नही तुमने शायद नही सुना है। की इमली के पेड़ पर भुत रहते है। तो मैंने कहाँ ये सब अंधविश्वास है। इस दुनिया मे भुत-वुत नही होता है। तभी हम ईमली खाने जाते है। और खुशी आम खाने जाती है। तभी एक आदमी ने कहाँ यहाँ का इमली और आम दोनो मे से कुछ मत खाना यहाँ पर भूत रहता है। तो मैंने कहा कोई भुत नही होता है। तो वह आदमी ने कहँ ये सुनसान बगीचे है। तुम लोग शायद यहाँ पर नए हो। तुम लोगो को ये बात क्यो नही समझ मे आ रही है। इतना बड़ा पेड़ लेकिन यहाँ पर कोई नही है। तभी मैंने कहाँ ये तो बात सही है। लेकिन मैं इमली खाकर ही यहाँ से जाऊगी। और इमली तोड़कर मैंने खाया और मुझे कुछ नहीं हुवा और मुझे विश्वास भी था कि इस दुनिया मे कोई भुत नही होता है। लेकिन मेरा विश्वास यकिन मे बदल गया। और वहाँ के लोग आज इमली और आम दोनो तोड़कर खाते है।

नाम सिमरन सिह
कक्षा - 9, घर - नरेन्द्रपुर

हमार बोली

हमार गाँव मे एगो कुमार दोस्त बाडन, ऊ हमरा संगे पढ़ेलन उनका कागज के नाव बनाये ना आवत रहे त हम उनकरा के सिखवनी त उ हमार दोस्त बन गईलन और रोज हमार संगे पढ़े जालन, क्लास मे हमारा खातिर जगह छेका के रखेलन, कबो हम स्कूल पढे ना जानी त हमरा घरे आके बतावेलन की स्कूल मे का-का पढ़ाई भईल ह, औ उ हमारा के लिखे के देलन।

नाम - विवेक कुमार
कक्षा - 3, घर - भवराजपुर

चुटकुला

एक आदमी था, वह पान के दुकान पर गया, और पान खरीद कर खाने लगा फिर दुकान वाले से पुछा मैं पान खाकर कहा थुकुँगा, पान वाला बोला जाओ रास्ते मे कही लाल बटन दिखाई देगा वही पर थुक देना। वह रास्ते में एक औरत को आते हुए देखा वह और लाल रंग के टिकुली साटी थी, उसने समझा यही लाल रंग का बटन है, उसने औरत के माथे का टिकुली को दबाया तब औरत चिलाई फिर उसने उसके मुह मे थूक दिया।

नाम - खुशबु कुमारी
कक्षा - 7
घर - बंथू श्रीराम

पहेली

साथ-साथ मैं जाती हूँ
हाथ नही मैं आती हूँ
(परछाई)

सर पर ताज गले मे थैला
उसका नाम बड़ा अलबेला
(मुर्गा)

नाम - मुन्नी कुमारी
(बालपथिक), कक्षा - 7
घर - गोंठी

कहानी

हाथी

बात बहुत पहले की है। जब हम आठ साल के थे। हमारे घर के बगल में एक हाथी रहती थी। हाथी का घर बहुत बड़ा था। जहाँ हाथी का घर था उसी रास्ते थे एक दिन हाथी की बहुत ही तेज आवाज से दहाड़ रही थी। गांव के सभी लोग बहुत डर गए थे। सब लोग अपना-अपना घर के दरवाजे बंद करके छत से हाथी की देख रहे थे। हाथी पुरे गांव में शोर मचाकर रख दी। गांव के लोग बहुत परेशान हो गए थे। हाथी उस दिन अपने महावत का भी बात सुनने के लिए तैयार नहीं थी। महावत भी मना-मना कर थक गया। जब हाथी का मालिक आया तो वो डरते हुए हाथी के पास आया और बहुत सारा लड्डू भी खिलाया। हाथी अब पहले की तरह हो गई। फिर वह हाथी अपने मालिक के पीछे-पीछे घर में चली गई और गांव के लोग ने चेन लिया।

नाम - प्रीतम कुमारी
कक्षा - 3, घर बडहुलिया

पहेली

काला घोड़ा गोरी सवारी एक के बाद एक की बारी।
(रोटी)

कहलाती है रात की रानी
आँख से निकले हरदम पानी
(मोमबती)

नाम - किरण कुमारी
कक्षा - 7
घर बडहुलिया

आने वाला थीम

पर्व-त्यौहार
गाँधी जयन्ती
खेल-कुद
मेरा गाँव

करने को कुछ

मैं अपने दोस्तो के साथ एक दिन खेल रहा था, तो मैं देखा की मेरे गाँव के कुछ लड़के परिवर्तन पढ़ने के लिए जा रहे है, मुझे लगा वहाँ के कुछ लडके परिवर्तन पढ़ने के लिए जा रहे है, मुझे लगा वहाँ पढ़ाई का पैसा भी लगता है, लेकिन मैं उन लोगो से पुछा तो वे लोग बोले पैसा नही लगता है, मैं वहा गया अपने गाँव के लडको के साथ वहाँ जाने के बाद मुझे बहुत अच्छा लगा और मुझे बहुत कुछ सिखने को मिला मैं देखा कि वहा बेकार पेज से अलग अलग समान बनाया गया है, मैं भी एक चिड़िया बनाया और अब मैं रोज परिवर्तन जाता हूँ और पेपर का घर, झुल्ला, फूटवॉल इत्यादि चीजे बनाना सीख गया हूँ, और मैं अपने स्कूलो मे दोस्तों को सिखाता हूँ

नाम प्रिस कुमार
कक्षा - 3, घर नरेन्द्रपुर

अपनी बात

बैलगाड़ी

मैं मामा के घर गया था तो बैलगाड़ी मे बैठा था। मुझे बहुत अच्छा लगा, मुझे बहुत मज्जा भी आया था। मेरे मामा के गाँव के एक आदमी चला रहे थे मैंने अपने नानी के पास गया था मेरा बहुत से दोस्त भी बैठे थे मैं बैलगाड़ी से स्कूल मे गया था तो झुलवा खेला। मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं बैलगाड़ी से घर भी आया।
नाम आकाश कुमार यादव
कक्षा - 6
घर - (भवराजपुर) उत्तर टोला

लेख

नाव

नाव पर हमलोग बैठते है। नाव पानी मे रहती है। नाव डगमग करते है। नाव पर बैठने पर बहुत अच्छा लगता है। नदी पार कर जाने के बाद मेला लगा रहता है। हमलोग भाई बहन मेला फरते है। मेला से खेलने के लिए बहुत सारा खिलौना खरीदते है। मेरा गाँव नदी के किनार पर है, नदी में हमलोग नहाते है। मेरी दादी रोज सुबह-सुबह नदी में नहाकर मंदिर मे पुजा करती है। और साधु को दान देती है। नाव जो मनुष्य चलाता है बाकी लोग बैठे रहते है।

नाम मिठू कुमारी
कक्षा - 4
गाँव - बंथू सलोना

निबंध

हाथी आया गाँव मे तो लोग देखते है, आदमी डर कर भागने लगता है हाथी गाँव मे जाता है फिर पेड़ से पत्ते तोड़कर खाता है, उसका सुड़ बहुत बड़ा होता है। हाथी अपने सुड़ मे लपेट कर किसी भी जानवर एंव आदमी को मार देता है। उसका घर जंगल मे है।

नाम - बृजेश कुमार
कक्षा - 4, धर- गोठी

शिक्षकों की कलम से

वाणी की मधुरता

एक गाँव में एक गरीब औरत रहती थी। वह बहुत ही अच्छी व्यवहार की थी। वह धन से गरीब थी लेकिन मन से अमीर थी। वह अपने जीविकोपार्जन के लिए अपने गाँव की बस्ती मे एक शहद की दुकान खोली और उसमे शहद रखकर बेचने लगी। उसके ज्यादा बिक्री से गाँव के एक व्यक्ति को (पड़ोसी) को जलन होने लगा। लेकिन उस औरत का व्यवहार शहद के समान मीठा था। उसके समान वह पड़ोसी का व्यवहार नही था। वह पड़ोसी व्यक्ति को जलन के कारन वह उस औरत के दुकान के पास ही अपना भी एक शहद का दुकान खोल लिया और शहद बेचने लगा। उस व्यक्ति की आवाज को सुनकर कोई भी उसके शहद को खरीदने नही जाता था। और वही उस औरत की दुकान पर काफी भीड़ लगी रहती थी। वह बहुत ही अंदर अंदर क्रोधित रह रहा था। बिक्री नही होने की वजह से एकदिन औरत ने व्यक्ति से पूछा की क्या जी अपका दुकान कैसा चल रहा है तो वह कटु आवाज में बोला कैसे भी चले तुमको उससे क्या लेना देना रहा। तो इस पर उसकी औरत बोली अपकी आवाज ही कौऐ की तरह कड़वा है तो अपका शहद क्या बिकेगा। इतना सुनकर वह और आग बबुला हो गया तो इस पर उसको औरत ने समझाया की साहब शहद बेचने के लिए शहद के समान आपका व्यवहार होना चाहिए। मन की मधुरता और व्यवहारिकता सबसे पहले जरूरी है। जैसे कि गाँव वाली औरत जो शहद बेचती है। उसके पीछे उसकी व्यवहार मे सालीनता और मधुरता छिपी है तभी उसकी बिक्री अधिक हो रही है।

नाम निशु कुमारी
पुस्तकालय (फैसलीटेटर)